INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

WWW.CASIRJ.COM
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

उत्तर प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास

आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)
Email:srsingh2472@gmail.com

शोधकर्ती पर्यवेक्षक

श्रीमती भुपेन्द्र कौर **डॉ मोहित मिश्रा**

सारांश–भारत में पत्रकारिता को 100 से भी अधिक समय हो गया है। सबसे पहले उदंत मार्तण्ड हिन्दी मासिक पत्र के प्रकाशन से हिन्दी पत्रकारिता की शुरूआत हुई। इसके संपादक और मुद्रक दोनों ही श्री युगल किशोर ने पश्चिम बंगाल के से कलकत्ता शहर से किया था। यह अखबार ज्यादा न चलने की वजह से इसे बन्द करना पडा, क्योंकि कलकत्ता में हिन्दी भाषा का प्रचलन कम होने के कारण इसको पढने वालों की संख्या कम थी और इन्हीं कारणों की वजह से इसे बीच में ही बन्द करना पडा। वर्तमान समय में भारत में अनेक प्रकार के पत्र–पत्रिका प्रकाशित हो रही हैं। देखा जाये तो हिन्दी भाषा देश और विदेश हर जगह अपनी छाप छोड रही है। हिन्दी पत्रकारिता से भी आज के युवाओं को काफी योगदान मिल रहा है। हिन्दी पत्रकारिता आज की जनता की जरूरत और देश को बढावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मुख्य शब्द–अज्ञानता, अस्तित्ववाल, लोकतन्त्रीय, इकोनामिक्स

हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास–भारत में हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास को 30 मई, 2022 को 196 साल हो गये है। इसी दिन भारत में हिन्दी पत्रकारिता का शुभारम्भ 30 मई, सन् 1826 में पहला साप्ताहिक समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' से हुआ था। जिसका संपादनक और प्रकाशन जुगल किशोर शुक्ल ने कलकत्ता के बडा बाजार के अमरतल्ला लेन, कोलूटोला से आरम्भ किया था। इसलिए इस दिन को पत्रकारिता के क्षेत्र में पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में इसे शुरू करने का श्रेय जुगल किशोर शुक्ल को दिया जाता है।

जुगल किशोर शुक्ल का जन्म स्थान कानपुर में किन्तु इन्होंने रोजगार के लिए कलकत्ता को अपना कार्यस्थल बनाया। इन्होनें ब्रिटिश शासन में भारतीयों के हित के लिए ये एक बडा कदम उठाया क्यो कि उस समय बंगला, अग्रेंजी, फारसी में पत्रों का बोल वाला था। उदन्त मार्तण्ड अकेला हिन्दी भाषा का ऐसा पत्र था जो कि सप्ताह में केवल एक ही बार प्रत्येक मंगलवार को प्रकाशित होता था।

आजादी के पूर्व की पत्रकारिता ने भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक हितों का सम्मान और समर्थन किया। उस समय समाज में अंधविश्वास और कुरीतियों का जो बोलबाला था उस पर समाचार पत्रों के माध्यम से जनता तक इसकी आवाज बुलंद की गई, और जनता को इन्के प्रति जागरूक किया गया। जनता में इन्के द्वारा निकाले गये समाचार पत्रों को पढ कर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक जागृति उठी। गाँधीजी के द्वारा चलाये गये अनेक आन्दोलन और बंगाल विभाजन के प्रति जनता में आक्रोश के अनेक कारणों का जो जोश देखने को मिला वह सब समाचार पत्रों की देन है। इनकें परिणाम के कारण निरंकुश एवं शोषण व्यवस्था के खिलाफ जो प्रतिक्रिया देखने को मिली उसने उत्तरदायी शासन की माँग को जन्म दिया।

लोगो में जो अंधविश्वास, अत्याचार, शोषण के विरूध जो अज्ञानता थी समाचार पत्रों के माध्यम से लोगों को इसके विरूद्ध जाग्रत करने एवं खडा करने में काफी मदद मिली। गणेशशंकर विद्यार्थी ने किसानों और मजदूरों पर जो अत्याचार किये गये उनका वर्णन "प्रताप" पत्र के माध्यम से सम्पूर्ण उत्तरी पूर्वी भारत में फैल गया। यह पत्र पहले साप्ताहिक था परन्तु बाद में इसे दैनिक कर दिया गया। विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी, जयनारायण व्यास आदि नेताओं ने समाचार–पत्रों को जन–जागरण का उत्तम माध्यम बनाया। इन्होने स्वयं समाचार–पत्रों का संपादन व कुछ पत्रिकाएँ प्रकाशित करना शुरू कर दिया।

पत्रकारिता का मुख्य उददेश्य समाज में प्रकाश करना और जनता को जागरूक करना है। इसी को ध्यान में रख कर भारत में पत्रकारिता का शुभारम्भ हुआ, भारतीय पत्रकारिता के सफर की यह यात्रा अनेक खण्डों व विभिन्न धाराओं की सहगामी रही है जो निम्न प्रकार से है।

पत्रकारिता की ब्रिटिश धारा

हिन्दी पत्रकारिता और भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी एक समान है। पत्रकारिता के द्वारा जातीय चेतना, अपने दायित्व और अपने अधिकारो के प्रति सचेत हो गये थे। इसके लिए ब्रिटिश सरकार उन पर अपनी दमनकारी नीति का प्रयोग करके उन्हें शिकार कर रही थी, जिसके लिए उन्हें ब्रिटिश सरकार के कुरूप व्यवहार की यातना का सामन करना पडा।

ब्रिटिश सरकार क्रान्तिकारी एवम् तेजधार संपादकों को अच्छी तरह समझ गई थी क्योंकि सरकार 1857 से ही समाचार पत्र की भूमिका से परिचित हो चुकी थी। सरकार जान चुकी थी की आने वाले समय में विशेष कर हिन्दी व क्षेत्रीय समाचार पत्र उनके लिए खतरा साबित हो सकतें है, इस लिए सरकार ने 1878 में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट तैयार गया। इस एक्ट में संपादको को जेल भेजना, भारी जुर्माना कानूनी कार्यवाही पर जोर दिया गया परन्तु दूसरी तरफ तीव्र गति से पत्रकारों व समाचार पत्रों की संख्या भी जोर पकडती गयी। विष्णुशास्त्री व बालगंगाधर तिलक ने सन् 1881 में 'केसरी' व 'मराठा' का प्रकाशन प्रारम्भ किया इसी क्रम को आगे बढाते हुए हरिशचन्द्रिका, स्वराज्य तथा मदनमोहन मालवीय के संपादन में सन् 1885 में 'हिन्दोस्थान' का प्रकाशन किया गया। उस समय पत्रिकाओं व समाचार पत्रों का प्रकाशन व संपादन करना सरकार की चुनौतियों का सामना करना या सरकार को खुली चुनौती देने के बराबर था। स्वराज्य के संपादक पद के लिए एक विज्ञापन इस प्रकार निकाला गया–"चाहिए स्वराज्य के लिए एक संपादक, वेतन–दो सूखी रोटी, एक गिलास पानी और प्रत्येक संपादक के लिए दस साल की जेल।"

भारत को ब्रिटिश सरकार के अत्याचारो से आजाद कराने के लिए अनेक आन्दोलनकारी व क्रान्तिकारी कवियों नें अपने प्राणों की आहूति लगा दी वही दूसरी तरफ हिन्दी पत्रकारिता ने भी आजादी की मशाल को जलाये रखने मे अपनी अहम् भूमिका निभाई। इसी संदर्भ में महादेवी वर्मा द्वारा लिखा यह वाक्य आन्दोलन में पत्रकारो की आहूति का प्रतीक जान पडता है–"पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है।" राजनीतिक क्षेत्र में विदेशी सरकार से टक्कर लेना ही स्वाधीनता संग्राम नहीं था बल्कि जनता को इस के लिए जानकारी देना और जाग्रत करने का कार्य करने में भी पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, पत्रकारो की लेखनी ने चारों तरफ ऐसा माहोल तैयार किया कि सारा देश ब्रिटिश सरकार के अत्याचार, शोषण, और दमनकारी नीतियों के खिलाफ एक जुट खडा हो गया। इसी संदर्भ में अकबर इलाहबादी की कुछ पंक्तियाँ–'खीचों न कमानों को, न तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो, तो अखवार निकालों' इन पंक्तियों ने देश में एक ऐसी जबाला पैदा कर दी कि देश के प्रत्येक कोने से समाचार पत्र–पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हो गया। भारतीयों ने किसी भी प्रकार के संकट पर ध्यान न देते हुए, हिन्दी के समाचार पत्रों का प्रकाशन बिना रूके एक मिशन की तरह शुरू किया। ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों, कठोरता के कारण कुछ पत्रों क प्रकाशन एवं कुछ पैसे की कमी की बजह से बन्द पड गये लेकिन दूसरी तरफ नए पत्रों का प्रकाशन भी होता रहा। हिन्दी के समाचार पत्रों ने सारे भारत वर्ष को जैसे एकता के एक सूत्र में बांधने का काम किया जिसकी शुरूआत 'उदन्त मार्तन्ड' से हुई। किन्तु यह पत्र कुछ ही समय चला एवं 4 दिसम्बर सन् 1827 को इसका अन्तिम अंक प्रकाशित हुआ। 10 मई सन् 1829 को कलकत्ता से राजा राममोहन राय ने जनता की परेशानी, संकट और दुर्दशा को देखते हुए 'हिन्दू हेराल्ड' नाम के समाचार पत्र का प्रकाशन किया। इसको हिन्दी फारसी और बंगला में 'बंगदूत' नाम से तीन अलग–अलग संस्करण प्रकाशित होते थे किन्तु यह समाचार पत्र भी जल्दी ही बन्द हो गया। 28 जनवरी सन् 1830 को बंकिम चंद चटर्जी जैसे लेखक ने अहम भूमिका के तौर पर 'संवाद प्रभाकर' पत्र का प्रकाशन किया। जिसमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी का जोरदार विरोध किया गया। सन् 1845 में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने गोविन्द धत्ते की सहायता करके 'बनारस अखबार', 6 मार्च सन् 1848 में प्रेम नारायण को इन्दौर में 'मालवा अखबार', सन् 1850 में काशी से तारामोहन मैत्रेय ने 'सुधाकर पत्र' सन् 1852 में बुद्धि प्रकाश', सुधावर्षण, धर्मप्रकाश, प्रजाहित, ज्ञान प्रकाश, आदि समाचार पत्र प्रकाशित हुए। इसी के साथ ही मौलाना अब्दुल ने बतौर संपादक अंग्रेजी हुकूमत के विरोध के लिए हिन्दी उर्दू अखबार का प्रकाशन किया, परन्तु अंग्रेजी हुकूमत ने संपादक को दण्ड के लिए तोप से बधंवा कर उडा दिया। सरकार के इस प्रकार के दुर्वव्यवहार से संपादकों में नयी क्रान्ति और जोश पैदा किया। सन् 1857 में पयामे आजादी का प्रकाशन शुरू किया गया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में इस समाचार पत्र ने अहम भूमिका निभाई। इसी भूमिका को देखते हुए लोगों नें इसे जंगें आजादी का अखबार नाम भी दिया। मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर को पयामे आजादी के अंक में स्वतंत्रता संग्राम की अगवानी करने और आजादी का गीत प्रकाशित करने के जुर्म में संपादक को फांसी पर लटका दिया गया।

भारतीय धारा में पत्रकारिता –भारत में जब अंग्रेजी पत्र पत्रिकाओं का बोलबाला था, तब भारत को राष्ट्रीय चेतना और जागरूकत की आवश्यकता थी। राष्ट्रीय चेतना के लिए हिन्दी भाषा जनमानस के रूप में जागरूक कर सकती थी क्योंकि अगर अंग्रेजी पत्रों की बात करे तो केवल उच्च वर्ग और शिक्षित वर्ग ही इसके संपर्क में आता है जिनकी संख्या कम ही थी। लेकिन आजादी की मशाल जगाने के लिए अधिक से अधिक लोगों का जागरूक होना आवश्यक था इसीलिए हिन्दी पत्रों की सहायता ली गई ताकी अनेक लोगों को जागरूक किया जा सके। अतः इस उददेश्य की पूर्ति के लिए हिन्दी पत्रकारिता का योग्दान देना आवश्यक था। यह सर्वविदित है कि भारतीय पत्रकारिता में सर्वप्रथम उदन्त मार्तण्ड ने इसकी शुरूआत की जिसके परिणाम शुभदायक और सकारात्मक रहे।

भारत के प्रमुख समाचार पत्र

उदन्त मार्तण्ड–हिन्दी का सर्वप्रथम समाचार पत्र पंडित जुगल किशोर द्वारा, 30 मई, सन् 1826 को 'उदन्त मार्तण्ड' जो की बंगाल से देवनागिरी लिपि में प्रकाशित हुआ। इसी तरह हिन्दी के इस समाचार पत्र का प्रकाशन हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्र से बाहर भी होना शुरू हुआ था। यह समाचार पत्र सप्ताह में एक बार प्रत्येक मंगलवार को प्रकाशित होता था। किन्तु सन् 1827 में 4 दिसम्बर को यह समाचार पत्र बन्द हो गया।

बंगदूत–उदन्त मार्तण्ड समाचार पत्र के बन्द होने के बाद ही 10 मई, सन् 1829 को बंगदूत नाम का एक साप्ताहिक पत्र जिसे की राजा राम मोहन राय द्वारा प्रकाशित किया गया। यह समाचार पत्र तीन भाषाओं हिन्दी, अंग्रेजी और फारसी में प्रकाशित किया गया। इस समाचार पत्र को हिन्दू हेराल्ड के नाम से भी जाना जाता है। इसका संपादन नीलरतन हालदार ने किया। यह समाचार पत्र भी उदन्त मार्तण्ड की तरह ज्यादा नही चला और जल्द ही बन्द हो गया।

समाचार सुधावर्षण–जिस समय देश में सिपाही विद्रोह हो रहा था उस समय बंगाल को छोडकर भारत के किसी भी भाग में कोई दैनिक समाचार पत्र नही निकल रहा था। इन दैनिक समाचार पत्रों में एक सुधावर्षण दैनिक हिन्दी समाचार पत्र भी था। यह समाचार पत्र दो भाषाओं बंगाला और हिन्दी में कलकत्ता से प्रकाशित होता था। सन् 1854 में इस समाचार पत्र का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। यह पत्र दो भाषाओं आधा भाग हिन्दी और आधा भाग बँगला भाषा में था। लेकिन यह भी ज्यादा नही चल सका और सन् 1968 में इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

सार सुधानिधि–13 जनवरी, सन् 1879 में संपादक पं. सदानन्द भिक्षु द्वारा प्रकाशित सार सुधानिधि समाचार पत्र भी ज्यादा समय तक नही चला। इसी प्रकार अप्रैल, सन् 1871 में अल्मोडा से प्रकाशित पं. बुद्धिवल्लभ पन्त के संपादक में 'अल्मोडा अखबार' उस समय का निडर और साहसी अखबार था। यह समाचार पत्र साप्ताहिक और पक्षिय पत्र होने के साथ–साथ अपने आप में साहस का प्रतीक रहा। यह अखबार 47 वर्षो तक अपनी पहचान बनाये रखने में कामयाव रहा। इस अखबार से प्रेरित होकर इस अवधि तक अनेक साहसी और जिन्दादिल संपादक उभरकर सामने आये। सार सुधानिधि के अन्तिम संपादक बद्रीदत्त पाण्डेय ने अंग्रेजी हुकुमुत के अधिकारियों और उस समय के जिला अधिकारियों पर जो प्रहार किया उस से सारे अंग्रेजी अधिकारी डर कर कापने लगे, जिस की वजह से इस अख्वार पर कडी नजर रखी गई और अन्त में इसका परिणाम यह हुआ की इस पर भी प्रतिबन्द लगा दिया गया।

राजपूताना गजट–सन् 1882 में दो भाषाओ में हिन्दी और उर्दू का मिला–जुला अखबार संपादन मुराद अली 'बीमार' के द्वारा प्रकाशित हुआ। मुराद अली 'बीमार' एक निडर संपादक थे इसी निडरता के कारण इन्हें जेल भी जाना पडा। इसी प्रकार का एक समाचार पत्र सन् 1814 ई. में अजमेर से प्रकाशित हुआ। उसे भी अपने साहसी और निडरता के कारण जयपुर के दीनानाथ के क्रोध व गुस्से का शिकार होना पडा।

लीडर–सन् 1909 में इलाहबाद से मदनमोहन मालवीय ने 'लीडर' समाचार पत्र का प्रकाशन किया। इसका दैनिक समाचार पत्र के तौर पर प्रकाशन होता था। इसी श्रंखला में सन् 1918 में पटना से सच्चिदानन्द सिन्हा द्वारा 'सर्च लाइट' का प्रकाशन किया। सच्चिदानन्द सिन्हा ने कालान्तर में 'इण्डिया नेशन' का भी प्रकाशन किया। सन् 1920 में हिन्दी में दैनिक 'आज' का प्रकाशन काशी के किया गया। प्रारम्भ में यह समाचार पत्र काफी आदरणीय था परन्तु वर्तमान समय में इसकी स्थिति चिन्तित बनी हुई है। सन् 1922 में अंग्रेजी में दैनिक 'आनन्द बाजार पत्रिका' का प्रारम्भ किया गया। सन् 1919 में दशरथ प्रसाद द्विवेदी ने गोरखपुर से एक व्यवस्थ की आलोचक पर एक समाचार पत्र 'स्वदेश' का प्रारम्भ किया। किन्तु सन् 1939 में अंग्रेजी सरकार की हुकुमत और आक्रोश के परिणाम के कारण द्विवेदी जी को जेल में सजा काटनी पडी तथा अपने समाचार पत्र को बन्द करना पडा। नवम्बर, सन् 1939 में पुरूषोत्तम द्वारा संपादित दैनिक 'नवजीवन' का प्रकाशन किया गया। सन् 1918 तक मध्य भारत का यह समाचार पत्र प्रकाशित होता रहा। यह अखबार भी अन्य अखबार की तरह सत्य और निडर का प्रतीक था इस बात का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सककता है कि अंग्रेजी हुकुमत ने इस प्रेस तथा इसकी फाइलों को नीलाम करा दिया था। सन् 1941 में मध्य–भारत के हिन्दी समाचार पत्र 'दैनिक किसान' को प्रकाशन के लगभग डेढ वर्ष बाद ही अंग्रेजी हुकुमत ने फाइलें अपने कब्जे में ले ली थी।

सन् 1922 में 'नवीन राजस्थान' प्रकाशित हुआ और प्रकाशन के बाद से ही इतना तेज निकला की सभी रियासतों ने इसके प्रवेश पर प्रतिबन्द लगा दिया। इसी प्रकार 'तरूण राजस्थान' से राजा महेन्द्र प्रसाद द्वारा प्रकाशित एक क्रान्तिकारी अखबार था। जिसमें शोभालाल गुप्त द्वारा एक लेख प्रकाशन के लिए उन्हे एक वर्ष की सजा काटनी पडी। बीकानेर से निकलने वाले 'दीनबन्धु' का प्रकाशन सिर्फ इस लिए बन्द कर दिया गया क्योंकी उसने रियासत के विरूद्ध खबर छापी थी। जयपुर से सन् 1941 में 'राजस्थान टाइम्स' साप्ताहिक समाचार पत्र जो की बाद प्रतिबन्धित करार कर दिया गया का प्रकाशन किया गया। इस समाचार पत्र के दोबारा प्रकाशन का प्रस्ताव रखा गया परन्तु शर्मा जी ने इसे शर्म शार बताते हुए अस्वीकार

कर दिया। 31 जनवरी, 1943 को किया गया प्रतिबन्धित अखवार 'जयपुर समाचारपत्र' श्यामलाल वर्मा द्वारा जयपुर से ही प्रकाशित किया गया और इस अखवार के लिए 6 महीने का कारावास तथा बाद में 'देश–निष्कासन' का अदेश दे दिया गया। पहले से ही निकलने वाले अंग्रेजी समाचार पत्र 'इण्डियन एक्सप्रेस' के संपादक टी. एस. चोकलिंगम ने सितम्बर, सन् 1934 में तमिल भाषा का एक दैनिक समाचार पत्र 'दिनमणि' का प्रकाशन किया। 12 अप्रैल, सन् 1947 में हरेन्द्र शर्मा द्वारा 'नया जमाना' का प्रकाशन किया परन्तु 12 अंक के बाद इसका प्रकाशन भी बन्द कर दिया गया।

आजादी प्राप्त होने के बाद सम्पूर्ण भारत देश में समाचार पत्र–पत्रिकाओं की बाढ सी आ गयी। भारत में इनकी संख्या 1 लाख के आस–पास पंहुच गयी। हिन्दी में अनेक दैनिक समाचार पत्रों का बोलबाला था जिनमें मुख्य रूप सें (नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, अमर उजाला, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर) सामने आये लेकिन अंग्रेजी में दैनिक समाचार पत्र भी इस श्रंखला में पीछे नही रहे और अपनी जगह बनाने में (टाइम्स ऑफ इण्डिया, स्टेट्स मैन, इण्डियन एक्सप्रेस, हिन्दूस्तान टाइम्स, इकोनामिक्स टाइम्स) आदि कामयाब रहे। इसी प्रकार हिन्दी पत्रिकाओ में अखण्ड ज्योति, सरस सलिल, इण्डिया टुडे ने अहम भूमिका निभाई। 25 जून, सन् 1975 को इन्दिरा सरकार की तरफ से देश में आपात काल लगाने के कारण समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को भी इससे प्रभावित होना पडा। आपात काल का यह समय भारतीय समाचार पत्र व पत्रिकाओं के इतिहास में काले साये के समान था। इस समय भी अनेक ईमानदार और साहसी पत्रकारों को जेल में डाल दिया गया।

अगर सही मायने में देखा जाये तो खोजी पत्रिका का आरम्भ यही से हुआ। बिहार में चल रहे कुछ काले कारनामों का पर्दा हटाने के लिए पत्रकार अश्विनी सरीन ने अवैधानिक तरीके से लडकियों की खरीदारी की थी। इसी प्रकार एक महिला पत्रकार प्रभादत्त की हत्या इसलिए की गयी क्योंकि इन्होंने चर्बी के राज से पर्दा हटा कर जनता के सामने इसे उजागर किया। इन्दिरा प्रतिभा–प्रतिष्ठान से पर्दा हटाने वाले अरूण शोरी ने गुनहगारों को अधेरे से बाहर निकाल कर जनता के सामने किया ताकि जनता भी इन्हें देख सके। इस अभियान को चलाते समय देश के कई बडे नेता और सांसद को रिश्वत लेते हुए रगें हाथों टी.वी. पर दिखाया गया। समाचार पत्रों के माध्यम से हमें अनेक प्रकार की धटनों की जानकारी प्राप्त होती है। इसमें कुछ धटनाए ऐसी होती ही जिनमें मानवीय रूचि एवं कोई समस्या में बौद्धिक और भावनात्मक रूप में शामिल किया जायें तथा कुछ धटनाएँ इनसे कही बढकर होती हैं।

अगर हम इस बात पर विचार करें कि क्या समाचार पत्र व पत्रिकाओं को स्वतन्त्र और स्वाधीन बनाया जायें या नही? तो इस बात पर विशेष गौर की जाती है कि वर्तमान समय में समाचार पत्रों की बागडोर बडे व्यापारियों के हाथों की कटपुतली बन कर उनके व्यापार का एक बडा हिस्सा बने हुए है। व्यापार के रूप में लाभ के लिए ही इन्हें चलाया जा रहा है तथा उद्योग के विकास की तरह ही इनके विकास पर ध्यान दिया जा रहा है। वर्तमान समय में ऐसी पत्रकारिता भी है, जिसे सही बोलने, लिखने, पोलखोलने वाली पत्रकारिता, अंग्रेजी में येलो जर्नलिज्म और हिन्दी में पीत–पत्रकारिता का नाम दिया जाता है। सही बात तो यह है कि पत्रकारिता का सही उददेश्य लेकर चलने वाले समाचार–पत्र पत्रिकाएं प्रायः पूरी तरह से असफल हो रहे है।

पत्र–पत्रकारों की जरूरत के हिसाब से देखा जाये तो पत्रकारों पर किसी भी प्रकार का नियन्त्रण नही होना चाहिए, ये अपने आप में स्वतन्त्र होने चाहिए क्योंकि आजाद रहकर ही राष्ट्र का निर्माण व सच्ची सेवा की जा सकती हैं। समाचार पत्र आजाद रह कर ही लोकतन्त्र की शक्ति को सही मायने में इक्टठा कर सकते हैं तथा उस डर और प्रभाव को कम व खत्म कर सकते हैं जो लोगों को लोकतन्त्र से दूर करते हैं। यदि समाचार देते हुए किसी प्रकार का दबाव या डर न हो, किसी तरह की पूर्वाधारण न हो तो अनेक समस्याओं का समाधान आसानी से किया जा सकता हैं। इसके साथ–साथ इन सब से लोगो में जागरूकता का सन्देश दिया जा सकता है तथा लोगों में सत्य बोलने सही सोचने की आदत भी पडेगी। अगर जनता सही सोचेगी तो यह लोकतन्त्र के हित में लाभकारी होगा, क्योंकि इसी आधार पर जनता जागरूक होकर यह विचार करेगी की वह अपना मत किसको दे इसके लिए उसके विचारों का सही होना आवश्यक है। सही विचार ही योग्य सरकार का चुनाव कर सकते है। कोई भी सरकारी संस्था या तन्त्र अपने आप में एक प्रकार से आजाद अस्तित्ववाले होते हैं अपना खुद का संचालन करते है वे अपने उत्तरदायित्व को तभी निभा पाते है जब वे इसे निभाने लायक योग्यता रखते हों क्योंकि ऐसे में सरकार का उत्तरदायित्व काफी बढ जाता है। चाहे कोई भी कवि अज्ञान को मनोरंजन मानता हो परन्तु लोकतन्त्र में अपने कार्यो को या राजनीतिक परिस्थिति के सही ज्ञान के आभाव में लोकतन्त्रीय संरचना डगमगा जायेगी। इसी प्रकार अगर जनता को सही जानकारी या समाचार नही मिले तो वो अपने अधिकारों के प्रति कैसे जागरूक हो पायेगे तथा कैसे अपनी लडाई लड पायेगे। जिन लोगों के हाथ में सरकार या पावर होती हैं, उनका पेट कभी भरता नही ये लोग हमेशा भूखे ही रहते है। ऐसे लोग अधिक से अधिक पावर अपने हाथों में करने की कौशिस करते हैं। बर्टेण्ड रसेल जोकि एक

विदेशी विद्वान हैं का कहना है कि सत्ता की भूख कभी भी पूरी तरह से शांन्त नही होती। सत्ताधारियों को सत्ता से जुडी कोई भी अच्छी सीख सिखने के लिए मजरूर नही किया जा सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि लोगों को सरकारी तन्त्र और उसकी द्वारा बनायी रणनीतियों पर नजर रखनी चाहिए। सभी लोगों के विचार है कि स्वतन्त्रता के लिए लगातार नजर ही सही मायने में एकमात्र रास्ता है। नजर तभी रखी जा सकती हैं जव जनता जागरूक और सजग होगी।

समाचार पत्र एक ऐसा साधन है जो कि लोगों तक घर बैठे सम्पूर्ण देश–विदेश की सरकार की धटनाओं का अवलोकन करके किसी निष्कर्ष पर पहुच कर जनता के सामने पेश करते है। वर्तमान समय में अनेक समस्याए चाहे वो राजनीतिक हो या आर्थिक चाहे वे व्यक्तिगत हो, राष्ट्रीय हों या अन्तराष्ट्रीय, इतनी कठिन और विकराल हो गयी है कि उनके वारे में सही जानना और समझना बहुत जरूरी हो गया है। इन सब की जानकारी हमें सुलझे हुए तथा अनुभवी पत्रकारों के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती हैं। पत्रकार ही देश–विदेश की सारी स्थिति और परिस्थिति का खुला जायजा लोगों तक पहुचा सकते हैं। वे समाचार पत्रिका और पत्र जो किसी राजनीतिक की नीति विशेष से जुडे है, कभी भी लोकतन्त्रीय शक्तियों को बढावा नही दे सकते। इसलिए कहा जा सकता कि समाचार पत्र युद्ध और शान्तिं दोनों की स्थितियाँ पैदा कर सकता हैं। समाचार पत्र और पत्रिकाओं के अलावा लोगों के पास सूचना पाने का सूचना देने का समाचार पत्रों के अलावा कोई दूसरा मजबूत साधन नही है। अगर समाचार पत्र किसी दल या सत्ता की विरोधी खबरे जनता को देते रहे तो लोग उसके प्रति भडक जायेगे और विद्रोह करने लगेगे। यही स्थिति अन्य राष्ट्र के बारे लागू होती है, इससे दूसरे राष्ट्र के प्रति लोगों के मन में धृणा पैदा हो जायेगी तथा आसानी से युद्व की स्थिति पैदा की जा सकती हैं। जैसे–पाकिस्तान सरकार जनता को अलग ठंग से चलाने के लिए समाचार पत्र–पत्रिकाओं का सहारा लेकर जनता को अलग ठंग से राह दिखता हैं। जब भी पाकिस्तान की सरकार को यह लगता कि स्थिति उनके अनुकूल नही है तो वो पाकिस्तानी जनता का ध्यान बाटने के लिए यह प्रचार करने लगते कि भारत पाकिस्तान पर हमला करने वाला है। अगर यह हो सकता है तो प्रचार के माध्यम से शान्ति की भी स्थिति लाई जा सकती है। अगर पत्र–पत्रिकाएँ लगातार इस प्रकार लोगों के गुस्से और आक्रोश की भावना पर सकारात्मक रवैया अपनाते हुए मरहम लगाया जा सकता है। इस प्रकार अगर यही सब होता रहा तो सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्रों में शान्ति और भाई चारे की भावना जाग्रत होगी।

उत्तर प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता–उत्तर प्रदेश भारत में जनसंख्या और क्षेत्रफल की दष्टि से एक बहुत बडा भाग है। पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य जीवन की मुख्य धटनाओं, गतिविधियों, अनेक पक्षों को पेश करना है। इसके साथ ही साथ साहित्य की भाषा और उसकी विधाओं को भी बढाना है। हिन्दी पत्रकारिता की इस धारा में उत्तर प्रदेश भी पीछे नही रहा। उत्तर प्रदेश से हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र 'बनारस अखबार' (1845) संपादक गोविन्द नाथ द्वारा निकाला गया एक साप्ताहिक समाचार पत्र था। कुछ पत्रकार हिन्दी पत्रकारिता के विकासक्रम में रोशनी के तोर पर सामने आये। ऐसे अखबारों ने उस समय में अपनी उपस्थिति दिखायी और अनेक समाचार पत्रों ने आजादी की मशाल को जलाए रखने का भी प्रयास किया। उत्तर प्रदेश में पत्रकारिता की बात करे तो इसका सीधा सम्बन्ध ईसाई मिशनरी विरोधी तथा आजादी के आन्दोलन से रहा है। यहां पत्रकार और पत्रकारिता विदेशी कार्य शैली के कारण अपनी जगह बनाने में आगे रहे। उत्तर प्रदेश में समाचार पत्र–पत्रिकाओं ने जनता को जागरूक करने का काम किया।

निष्कर्ष–हिन्दी पत्रकारिता अपने शैशव काल 1826 ई. से उदन्त मार्तण्ड से प्रारम्भ हुई और भारतेन्दु युग तक प्रफुलित हुई। हिन्दी पत्रकारिता को भारतेन्द्रु युग में काफी बल एवं समृद्धि प्राप्त होने के साथ–साथ हिन्दी भाषा को भी नये आयामों का सामना करना पडा। उस समय के भारतेन्द्रु युग के पत्रकार अपने निजी स्वार्थो को छोडकर समाज कल्याण के कार्यो में बढचढ कर लगे हुए थे। इसी प्रकार हिन्दी पत्रकारिता का एक अन्य युग जिसे द्विवेदी युग के नाम से भी जाना जाता है और इसकी शुरूआत सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन से हुई मानी जाती है। उस समय के सभी समाचार पत्रों में एक बात जो सभी में सामान्य थी, वह थी स्वतन्त्रता प्राप्त करने की प्रवल इच्छा, उस समय के सभी पत्र–पत्रिकाएँ राष्ट्रीय गौरव के रंग में रगें दिखाई देते थे। इसके बाद गॉधी युग को भी मुख्य रूप से आन्दोलन का दौर कहा जाता है। उस समय के पत्र–पत्रिकाओं का भी मुक्ष्य उद्देश्य हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार करना तथा समाज में पनप रही रूढियों को दूर करना एवं समाज में आपस में भाईचारे की भावना को विकसित करके बराबरी को बढावा देना था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. तिवारी, डॉ. अर्जुन, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद इतिहास, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1997,
2. तिवारी, डॉ अर्जुन, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन् 1997,
3. देवाई, डॉ. आदर्श, जनजागरण में हिन्दी पत्रकारिता, श्याम प्रकाशन, जयपुर,

4. सक्सेना, के.एस. राजस्थान में राजनीतिक चेतना और जनजागरण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर,
5. चडढा, सविता, नई पत्रकारिता और समाचार लेखन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली सन् 1989,
6. पाटिल, डॉ. पदमा, हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप, आयाम और संभावना,
7. अनुजा, डॉ. मंगला, भारतीय पत्रकारिता : नीवं का पत्थर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, सन् 1996,
8. अगनानी, कन्हैया, पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर सन् 1999,
9. गौतम, रूपचन्द्र, दलित पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 1980,
10. अनुज, डॉ मंगला, भारतीय पत्रकारिता : नीवं का पत्थर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, सन् 1996,
11. कौल, जवाहरलाल, हिन्दी पत्रकारिता का बाजारभाव, प्रभात प्रकाशन, संस्करण सन् 2000,
12. आचार्य दादृदयाल, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बीकानेर का योगदान, चेतना प्रकाशन, बीकानेर, सन् 1997
13. गोस्वामी, प्रेमचन्द, पत्रकारिता के प्रतिमान, किशोर बुक डिपो, जयपुर, सन् 1977,
14. गुप्ता, मोहन लाल, राजस्थान : जिलेवार सास्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन भाग 1. नवभारत प्रकाशन, जोधपुर, सन् 2009,

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM